SADRAG

उगता सूरज

2014-15

उगता सूरज गान

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

देखो हमने पढ़ना सीखा
हर मुश्किल से लड़ना सीखा।
आओ तुम भी बच्चों आओ
और हमारे संग में गाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

दिल में ये अरमान जगाओ
घर–घर में शिक्षा अपनाओ।
कोई बच्चा छूट ना जाये
घर–घर में आवाज लगाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

पढ़ो लिखो इंसान बनो तुम
अपने देश की जान बनो तुम
सब बच्चों को ये बतलायें
किरणों से भी आगे बढ़ जायें।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

उगता सूरज : एक साकार सपना

उगता सूरज, सुबह की चढ़ती धूप लेकर बच्चों की तरह-तरह की कहानियां और किस्से लेकर फिर से आप सबके समक्ष प्रस्तुत हैं। हर वर्ष की तरह यह पुस्तक बच्चों की कल्पना और स्वप्न की एक जीती जागती झांकी है।

हमें ख़ुशी है कि उगता सूरज के तहत कितने ही बच्चे और बच्चियां अब स्कूल की ओर अग्रसर हो चुके हैं। जब छोटे-छोटे बच्चे बस्ता पकड़कर, अपना सिर ऊपर करके अपने घरों से निकलते हैं तो यह दृश्य देखने लायक होता है। खुशी होती है कि कितने ही बचपन बेनामी की ज़िन्दगी से परे पढ़ाई लिखाई की दुनिया में कदम रख चुके हैं। यही हमारा मकसद है। यही हमारा उद्देश्य है। हर बच्चा इतना काबिल हो कि अपनी ज़िन्दगी के सपनों को साकार कर सके। इसी से समाज में वो बदलाव आएगा जिसके लिए हम सब सपना देख रहे हैं।

उगता सूरज की इस प्रतिलिपि में हमारे बच्चों के जीवन के साकार दृश्य हैं, जो उन्होंने खुद अपने शब्दों में लिखे हैं। इन लेखनों के द्वारा हम बच्चों के बचपन की सच्चाई न केवल जान सकते हैं बल्कि समझ भी सकते हैं कि हर बचपन इतना आसान नहीं होता जितना कि हम समझते हैं।

हम चाहेंगे कि आप बच्चों के लेख पढ़ें और सोचें कि क्या यही हमारा भविष्य है या हम इसमें कुछ बदलाव ला सकते हैं।

इस प्रतिलिपि में हमारे साथ जुड़े Step By Step School & Noida, Class 11 IB के बच्चों द्वारा अपने विचार और अनुभव लिखे गए हैं जो भारत के बचपन का एक अलग ही दृश्य दर्शाते हैं।

उगता सूरज की इस प्रतिलिपि को साकार करने के लिए मैं Program Coordinator – Ms. Sandhya Chauhan और उगता सूरज सेंटर पर सेवृत Facilitators को धन्यवाद देती हूँ।

आने वाले वर्ष की शुभकामनाओं के साथ !

डॉ. माला भण्डारी
अध्यक्ष
सदरग

उगता सूरज : सुबह की पहली किरण

उगता सूरज प्रोग्राम एक ऐसा कार्यक्रम है जहाँ बच्चे आकर अपने छोटे छोटे सपने बुनते हैं और उन्हें पूरा करने की कोशिश करते हैं। हम अपने इस कार्यक्रम में उन बच्चों के साथ कार्य करते हैं जो किसी ना किसी वजह से शिक्षा से वंचित रह गए हैं और स्कूली शिक्षा की तरफ उनका झुकाव कम हो गया है।

उगता सूरज में बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ आगे बढ़ने के मौके व अवसर भी दिए जाते है, जिससे वे अपनी प्रतिभाओं को उभारकर दुनिया को दिखा पायें कि ये है हमारे देश का आने वाला सुनहरा कल।

हमारा लक्ष्य है - बच्चों में इस बात का आत्म-विश्वास बढ़ाना कि वे भी इसी समाज के सदस्य हैं और वे अपने सपनों को पूरा करने में समर्थ हैं।

इस प्रतिलिपि के माध्यम से हम आप सभी तक यह सन्देश पहुँचाना चाहते हैं कि ये बच्चे उस सूरज की तरह ही हैं जिस पर अगर रात का काला अँधेरा है तो अगले दिन इतनी रौशनी देता है कि अँधेरे का नाम भी मिट जाता है। सब जानते हैं कि हर अँधेरे के बाद सूरज उगता जरुर है।

मैं संध्या चौहान, उगता सूरज कोर्डिनेटर, इस सूरज की रौशनी को आप तक पहुँचाने में उगता सूरज की सभी Facilitators और उन बच्चों का जो हमारे साथ जुड़े हुए हैं, तहे दिल से धन्यवाद् देती हूँ।

आप सभी कि शुभकामनाओं के साथ !

संध्या चौहान

प्रोग्राम कोर्डिनेटर

माता पिता का साया

संजू झा
निठारी सेन्टर
फैसिलिटेटर

बेटी की जरूरत होती है मां
उतने ही संस्कार देते हैं पिता
मां का महत्व ज्यादा है पाया
पर पिता का महत्व भी
कम नहीं बताया
बच्चे की जिन्दगी नहीं चलती
दोनों के बिना
रातों के नींद खराब हुई मां की
तो पिता भी चैन से सोया कहां
इसलिए कहती हूं।
माता-पिता है एक सिक्के के दो पहलू की तरह
माना मां ने गोद में खिलाया है।
तो उंगली पकड़कर पिता ने चलना सिखाया
बताएं दोनों के फर्ज में
कब अन्तर पाया है।
इन दोनों की ममता की कीमत
कोई अब तक चुका न पाया है
मां ने बना के है खाना खिलाया
तो पिता ने हमारे लिए
धन है कमाया
माता-पिता हैं दोनों बराबर
यह लिखकर मैंने बस यही बताया
ईश्वर ने जो अनमोल तोहफा
इंसान को दिया है
वह है माता-पिता का साया।

सहजाद
10 वर्ष
निठारी सेन्टर

मेरा नाम सहजाद है मैं 10 साल का हूं। मेरे दो भाई और तीन बहन है। जब मैं लगभग दो साल का था तब मेरे मम्मी-पापा में अक्सर लड़ाई होती थी। जब मम्मी पापा की लड़ाई होती थी तो हम लोगों को पापा मम्मी मारते थे। और घर में खाना भी नहीं बनता था। पापा ठेला चलाते थे और मम्मी कोठी में काम करती है। एक दिन मम्मी ने किसी और से शादी कर ली और पापा ने किसी और से। मेरे दूसरे वाले पापा जो है वह बेल्ट से हमें बहुत पीटते हैं। और मम्मी को भी मारते हैं। मैं साइकिल की दुकान पर काम करता था और मेरी बड़ी बहन कोठी में काम करती है। एक दिन संजू मैम ने मुझे बुलाया और पढ़ने के लिए कहा। मैं सेन्टर में पढ़ने गया पर मेरे दूसरे वाले पापा ने मुझे बहुत मारा और बोला कि कल से साइकिल दुकान पर जाओगे क्योंकि वहां 20-30 रुपए रोज मुझे मिलते थे। फिर संजू मैम मेरे घर गई और मेरे पापा से बात की गुस्सा भी की तो मैं फिर सेन्टर में आने लगा। अब मैं 5वीं कक्षा में दुर्गा पब्लिक स्कूल में पढ़ता हूं। मेरे भाई और दो बहनें भी मेरे साथ स्कूल में पढ़ने जाते हैं। मुझे पढ़ना अब बहुत अच्छा लगता है।

रानी
8 वर्ष
निठारी सेन्टर

बहुत सारे फूल है पर कमल जैसा कोई नहीं
बहुत सारे पक्षी है पर मोर जैसा कोई नहीं
बहुत सारे झंडे हैं पर तिरंगा
जैसा कोई नहीं
बहुत सारे स्कूल हैं पर
उगता सूरज जैसा
कोई नहीं।

करो खुद को बुलंद

आरती कुमारी
11 वर्ष
नोएडा पब्लिक स्कूल
विद्यारत्न, कार्यक्रम

करो खुद को बुलंद इतना कि
आसमान छू सको
जिन्दगी की हर मुश्किल को
सफलता से पार कर सको
अगर तलाश रहे हो मंजिल
तो देर न करो
इस खूबसूरत पल को
यूं गंवाया न करो
हर रात के बाद
आती है सुबह
हर हार के बाद
होती है जीत
महकते गुलशन से
मन न भरो
अभी और भी है मंजिलें
कोशिश कम न करो।

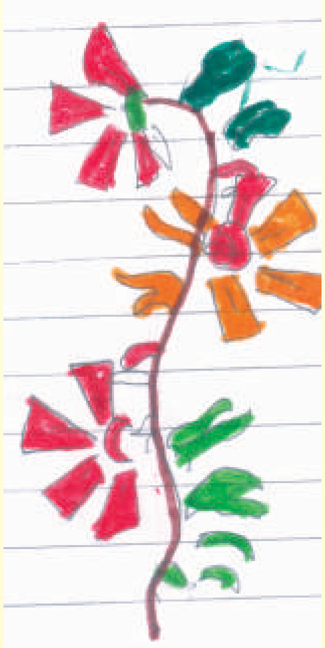

मेरा परिचय

हिना
12 वर्ष
नोएडा पब्लिक स्कूल
विद्यारत्न, कार्यक्रम

मेरा नाम हिना है
मेरी मम्मी का नाम रजिया है।
मेरे पापा का नाम मो. परवेज है
मेरी एक बहन है
मेरे स्कूल का नाम उगता सूरज है
मुझे आम खाना अच्छा लगता है
मुझे हिन्दी पढ़ना अच्छा लगता है
मेरा एक सपना है कि मैं एक बड़ी
डॉक्टर बनना चाहती हूं
मुझे उगता सूरज में पढ़ने का मौका मिला
इसलिए आज मैं इतने बड़े स्कूल में
पढ़ती हूं। मेरे स्कूल का नाम नौएडा
पब्लिक स्कूल हैं मुझे उगता सूरज में
खेलना, कलर करना और पढ़ना बहुत
अच्छा लगता है। मैं रोज यहां आती हूं।

सुनहरी किरण

अभिषेक कुमार
14 वर्ष
नोएडा पब्लिक स्कूल
विद्यारत्न, कार्यक्रम

एक किरण खिड़की से होकर
चुपके-चुपके आती है।
हुआ सबेरा, जागी मैया
कहकर हमें जगाती है।
किरण सुनहरी, प्यारी-प्यारी
धूप सुहानी लाती है।
आलस छोड़ो, काम करो सब
यह सन्देश सुनाती है।
रोज सबेरे दूर देश से,
दौड़ी-दौड़ी आती है।
घर में वन में, खेत बाग में,
सबको किरण जगाती है।

उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

रूपा
14 वर्ष
निठारी सेंटर

हर बुरे वक्त का अंत है होता
फिर इंसान इतना क्यों है रोता
क्यों हर पल उदास है रहता
उगता सूरज मुझसे ये कहता।

हो जाएगी ये खत्म वो तुम्हारी काल रात
अंधेरे के बाद उजाला याद रख ये बात
अच्छे दिन देखता वही जो दुख सहता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

फिर से आज तुमको नया मौका मिला
देखना कहीं फिर ना खा जाओ धोखा
जो कीमत वक्त की पहचाने वही उड़ता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

दिखा दो जग को है क्या चमक हर
इंसान के अंदर होती है एक महक
पर कोशिश से ही पत्थर हिलता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

अभी तो तुमको बड़ी दूर है जाना
जिन्दगी ढलने से पहले बहुत कुछ है
तुमको पाना
पर जो तेज भागे फल उसे ही मिलता है
उगता सूरज मुझसे ये कहता है।

सोनी
12 वर्ष
हरौला सेन्टर

मेरा नाम सोनी है। मेरे परिवार में 6 सदस्य हैं। मेरे पिताजी कम्पनी में काम करते हैं और माताजी भी काम करती है। मेरे परिवार बहुत मुश्किल से चल रही है। मेरे दो भाई है। एक का नाम सोनू और दूसरे का अंशु है। सोनू भईया बहुत बीमार रहता है। दो बार उनका पेट का ऑपरेशन हुआ था। पहले काम करते थे अब वह काम नहीं कर पाता।

दूसरा भाई अंशु है। वह ना बोल पाता है ना देख सकता और ना सुन सकता है। एक आंख का पांच बार ऑपरेशन हो चुका फिर भी वह देख नहीं सकता। मैं हमेशा उसको अपने साथ रखती हूं। फिर भी वह बहुत बार गुम हो गया था। उसको लेकर हम बहुत परेशानी का सामना करते हैं।

मैं अपने भाई बहन का बहुत ध्यान रखती हूं।

रेशमा
11 साल
हरौला सेन्टर

मेरा नाम रेशमा है। मेरे परिवार में 6 सदस्य हैं। मैं सबसे बड़ी हूं। मेरे परिवार चलाने के लिए मेरे मां काम करती हैं। क्योंकि मेरे पिताजी बहुत शराब पीते थे और घर में आकर लड़ाई करते थे। एक दिन पापा हमें छोड़कर चले गए। तब से मेरी मां सुबह से लेकर शाम तक मजदूरी करती है। और जितना पैसा मिलते है और बहुत मुश्किल से हमारा घर चलता है।

मैं चाहती हूं कि पढ़ाई करूं मेहनत करूं अच्छी नौकरी करके मैं अपनी मां को आराम दे सकूं।

मेरा सपना

प्रियंका
14 वर्ष
हरौला सेन्टर

मेरा नाम प्रियंका हैं मैं पिछले साल उगता सूरज में पढ़ती थी। फिर मैम ने मुझे प्राइवेट स्कूल में भर्ती करवाया। मेरा सपना यह है कि मैं बहुत बड़ी डांसर बनना चाहती हूं। और गरीब बच्चों को मुफ्त में डांस सिखाना चाहती हूं। मैं खुद भी अभी डांस सीख रही हूं। और साथ ही साथ पढ़ाई भी कर रही हूं।

राजलक्ष्मी, बरौला सेन्टर

विभा कुमारी
10 वर्ष
हरौला सेन्टर

मेरा नाम विभा कुमारी है मैं उगता सूरज में पढ़ती हूं। एक रोज मैं अपने घर की खिड़की के पास बैठी थी तो मेरी नजर अचानक एक लड़की के तरफ गई। मैंने देखा कि उस लड़की पर बहुत अत्याचार हो रहा था। उसके पापा उसे बहुत मार रहे थे और वो लड़की बहुत रो रही थी। और बोल रही थी कि मैं भी सबकी तरह पढ़ना चाहती हूं। और पढ़कर कुछ बनना चाहती हूं। उसके पापा उसकी बात को मान ही नहीं रहे थे और बोल रहे थे कि लड़की कहीं बाहर पढ़ने के लिए नहीं जाती है। मैं जो देखी तो मुझे बहुत बुरा लगा और मैं सोच रही थी कि लड़की के ही साथ सब कुछ गलत क्यों होता है? लड़की को अपने हक से जीना क्यों नहीं पड़ता है?

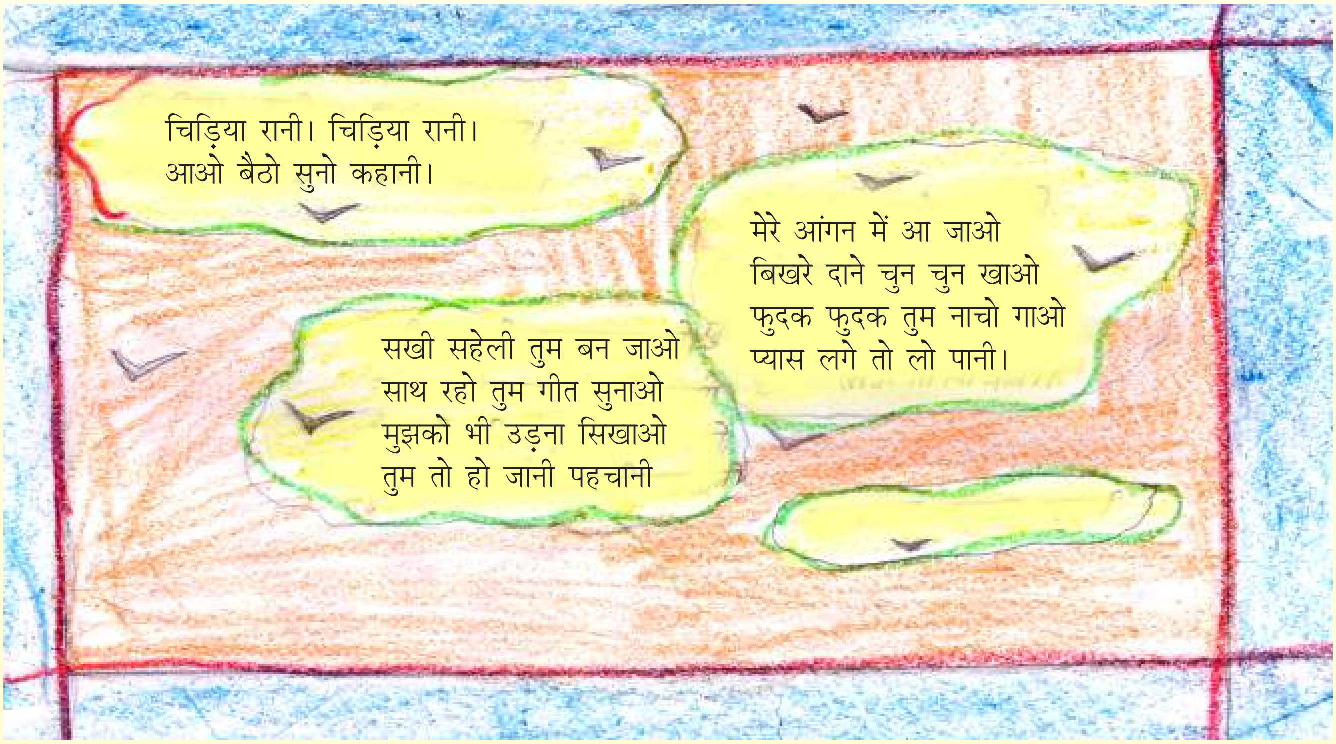

रोहिनी, 9 वर्ष
नोयडा पब्लिक स्कूल
विद्यारत्न कार्यक्रम

सड़क के उस पार एक बच्चा था जो अपनी मां से बिछड़ गया था। अब वो क्या करेगा वो जोर-जोर से रो रहा था। वो अपने मां के पास जाना चाहता था लेकिन वो नहीं जा सकता था क्योंकि उसे अपने घर का पता मालूम नहीं था। घर में उसकी मम्मी जोर-जोर से रो रही थी वो बहुत परेशान हो रही थी। जब उसकी मां बाहर गई ढूंढने तो उसने बहुत ढूंढा। तभी अपने बेटे को सड़क के उस पार रोते हुए देखा तो उसकी मां दौड़कर गई और अपने बेटे को सीने से लगा लिया फिर उसकी मां ने अपने भगवान की पूजा की और नारियल चढ़ाया।

बारिश की बूंदे

रूई से बादल नभ में,
बादल ढोल बजाते आए टप-टप बरसी कितनी बूंदे।
अहा बारिश की ठंडी बूंदे मेंढक उछले ताल तलैया
कागज की नैया ताता थैया कोयल कूके मोर भी नाचे
टप-टप बरसी कितनी बूंदे टुपर-टुपर बारिश की बूंदे
बंद हुई खिड़की पानी भरी सड़के भीगी
भीगी हलवा पकौड़ी खस्ता कचौड़ी शोर मचाएं
सारे बच्चे खेलते कूदते भागते बच्चे छप-छप
मोती जैसी बूंदे अहा बारिश की ठंडी बूंदे।

रोहिनी
नौएडा पब्लिक स्कूल

***

कुन्दन कुमार
13 वर्ष
हरौला सेन्टर

- कुन्दन कुमार

प्रियांशु राज
6 वर्ष
हरौला सेन्टर

सुबह

सूरज की किरणें आती है
सारी कलियां खिल जाती है
अंधकार सब खो जाता है
सब जग सुंदर हो जाता है
चिड़िया गाती है मिलजुलकर
बहते हैं उनके मीठे स्वर
ठंडी-ठंडी हवा सुहानी
चलती है जैसे मसतानी
यह प्रात: की सुख बेला है
धरती का सुख अलबेला है
नई ताजगी नई कहानी
नया जोस पाते हैं प्राणी
खो देते हैं आलस सारा
और काम लगता है प्यारा
मेहनत प्यारी लगती है जिनको
मेहनत भली लगती है जिनको
मेहनत सबसे अच्छा गुण है
आलस बहुत बड़ा दुर्गुण है
अगर सुबह भी अलसा जा
तो क्या जग सुदर हो पाए

काजल
8 वर्ष
बरौला सेन्टर

जल व्यर्थ न करो

उगता सूरज

तमन्ना
9 वर्ष
बरौला सेन्टर

IMT

समीर
6 वर्ष
हरौला सेन्टर

सपना
9 वर्ष
बरौला सेन्टर

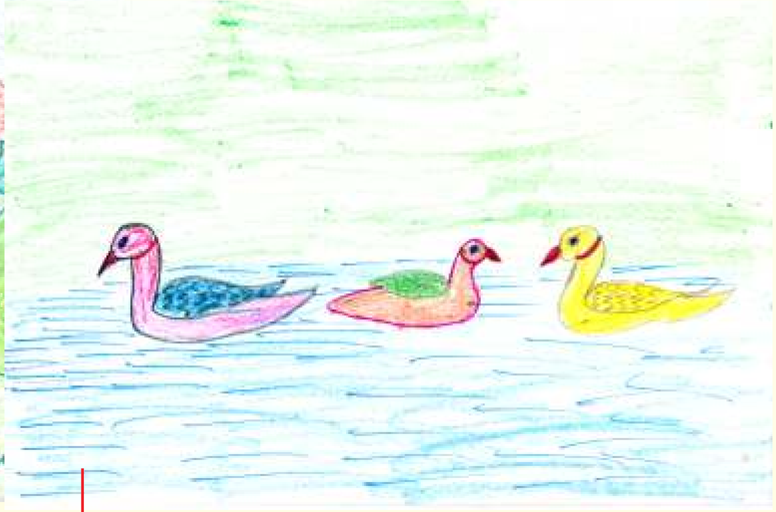

शोभा
10 वर्ष
उगता सूरज, बरौला सेन्टर

सहिष्ठा
7 वर्ष
हरौला सेन्टर

जल ही जीवन है

खुशबु
11 वर्ष
बरौला सेन्टर

मेरा नाम खुशबु है। मैं 10 साल की हूं। मेरे परिवार में पांच सदस्य है मेरे पापा कम्पनी में काम करते है और मम्मी कोठी में काम करती है मेरे दो भाई है अमित और सुनिल वो भी मेरे साथ पढ़ने आते हैं मेरे घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। मैं एक साल से यहां पढ़ने आ रही थी पहले मेरा छोटा भाई अमित 3 साल का था तो मुझे उसकी देखभाल करनी होती थी और घर पर ही रहती थी मगर एक दिन मैं जब पार्क में खेल रही थी तब मुझे अन्नू और रीना मैम मिली उन्होंने मुझसे पूछा तुम स्कूल क्यों नहीं जाती तो मैंने उन्हें बताया कि मेरा भाई अभी छोटा है और दूसरा उसे मेरे पापा के पास इतने पैसे नहीं होते कि वो मुझे पढ़ा सकें तब उन्होंने बोला कि हमारी एनजीओ बच्चों को मुफ्त में पढ़ाती है और कॉपी, पेंसिल सब देते हैं और तुम भाई को लेकर पढ़ने आया करो तब से मैं रोज स्कूल जाती हूं अब मेरे भाई और मेरा एडमिशन सरकारी स्कूल में होने वाला है अब आगे भी पढ़ पाऊंगी।

खुशबु, 11 वर्ष, बरौला सेन्टर

मेरा नाम तमन्ना है मैं उगता सूरज स्कूल में पढ़ती हूं मेरे घर में चार सदस्य है मैं मेरी मम्मी पापा और छोटी बहन। मेरे पापा सब्जी बेचते हैं और मम्मी housewife है मैं रोज पढ़ने जाती है मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता और मैं बड़ी होकर Teacher बनना चाहती हूं मैं अब तक गांव में पढ़ी थी लेकिन एक साल पहले जब हम बरौला में रहने आए तो हमारे इतने पैसे न थे कि मैं अच्छे स्कूल में पढ़ूं तब मुझे सदरग एनजीओ के बारे में पता चला और मेरे पापा मम्मी ने Admission कराया तब शुरू में मुझे ज्यादा कुछ पढ़ना नहीं आता था लेकिन Anu और Reena मैम ने मुझे अच्छे से पढ़ाया और समझाया कि अगर मैं अच्छे पढ़ूंगी तभी कुछ बन पाऊंगी और मैंने पहले से ज्यादा मेहनत करने और अब अच्छे स्कूल में पढ़ सकती हूं मेरे एडमिशन अंकित मेमोरियल स्कूल में हो गया है और अब कक्षा 2 में पढ़ती हूं।

तमन्ना
10 वर्ष, बरौला सेन्टर

मैं अन्नू चौहान सदरग एनजीओ बरौला में फैसिलिटेटर के तौर में 2 साल से काम कर रही हूं मैं 2012 से यहां पढ़ाती हूं मैंने जब शुरू में Join किया था तब काफी डर लगता था आने जाने में मगर आज मैं स्वतंत्र हो गई हूं। मुझमें विश्वास आ गया है कि मैं भी कुछ कर सकती हूं डरने से काम नहीं होता मैंने यहां आकर महसूस किया अभी भी ऐसे बहुत बच्चे हैं जो पढ़ना तो चाहते हैं मगर वो पैसे न होने के कारण या पारिवारिक स्थिति अच्छी न होने के कारण पढ़ नहीं पाते। माला मैम ने इन बच्चों के लिए यहां बहुत कुछ अच्छा किया फ्री में पढ़ती है उन्हें कॉपी किताब पेंसिल सब सामान देती है ताकि इन्हें पढ़ने में दिक्कत न हो और समय-समय घुमाने भी ले जाते हैं। इससे और बच्चे भी आते हैं पढ़ने के लिए। मुझे इन बच्चों को पढ़ाने में इनकी मदद करने में बहुत अच्छा लगता है और आगे भी इसी क्षेत्र में काम करना चाहती हूं और मैं माला मैम को धन्यवाद कहना चाहूंगी कि उन्होंने मुझे यहां पढ़ाने और फैसिलिटेटर के तौर पर काम करने का मौका दिया।

अन्नू चौहान
बरौला सेन्टर फैसिलिटेटर

पूजा
नगला सेन्टर

सोनम
11 वर्ष
नंगला सेन्टर

मेरा नाम सोनम है मैं डॉक्टर बनना चाहती हूं क्योंकि मेरा भाई एक आंख से देख नहीं पाता है और मेरे भाई पर स्कूल में सभी बच्चे हंसते हैं तो मुझे बहुत दुःख होता है। मेरे माता-पिता के पास इलाज के लिए पैसे नहीं है इसलिए मैं चाहती हूं कि मैं डॉक्टर बन के गरीब लोगों का मुफ्त में इलाज करूंगी ताकि मेरे भाई की तरह किसी और बच्चे का भविष्य खराब न हो।

विशाल
नंगला सेन्टर

आओ आओ चन्दा मामा
पहनो मेरा यह पजामा
रोज शाम को खूब नहाना
खाना पीना मौज उड़ाना
रोज शाम को घर मेरे आना

रोहित
9 वर्ष
नंगला सेन्टर

कोमल उपाध्याय
फैसिलिटेटर
नंगला सेन्टर

मेरा नाम कोमल उपाध्याय है मैं सदरग एनजीओ नंगला में फैसिलिटेटर के तौर पर एक साल से काम कर रही हूं मैं 2014 से यहां पर पढ़ा रही हूं मुझे बहुत अच्छा लगता है मैं छोटे बड़े बच्चों को पढ़ाती हूं जब से मैं यहां पढ़ाने लगी हूं मेरी नॉलेज और भी ज्यादा बढ़ गई है।

जब मैं शुरू में पढ़ाने आयी थी जब मुझे बहुत डर लगता था कि मैं कैसे संभाल पाऊंगी इतने बच्चों को, वक्त के साथ-साथ मुझे बच्चों के साथ रहने की आदत हो गई। और मुझे खुशी होती है कि जो पहले मैं खुद इस जगह पर पढ़ती थी जहां ये बच्चे पढ़ रहे हैं, भूतकाल में मैं वहीं इन्हीं बच्चों की तरह पढ़ी थी, आज मैं उन बच्चों को पढ़ाकर उनका भविष्य बनाना चाहती हूं उन्हें भी कल अपने जैसा अच्छा टीचर बनाना चाहती हूं। मुझे बहुत खुशी है कि मैं आज उगता सूरज से जुड़ी हुई हूं।

धन्यवाद

नया जमाना

संजू पटेल, 13 वर्ष
उगता सूरज, निठारी सेन्टर

आज का इंसान अगर
भीतर से कटपीस ऊपर से ब्यान
आ का नेता
डबल रोल करने वाला अभिनेता
आज का टीचर
कांपता हुआ पर दे रहा है लैक्चर।
आज का स्टूडैंट
कॉपी कोरी अंक सौ परसेंट
आज की सहेली
कभी न समझ में आने वाली पहेली
आज का मित्र
एल्बम में लगने वाला चित्र
आज का गुरू
टयूशन मिलने पर होता है। शुरू

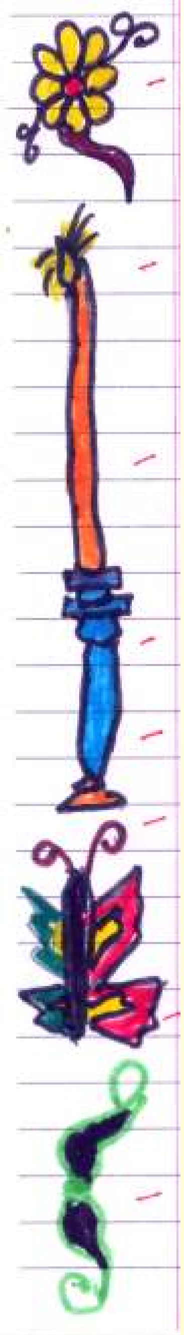

Aman : My perspective on childhood

Many times, you don't look at people. You look through them. Or even if you notice them... It's difficult to realize exactly how difficult, different, full their lives are. One such kid was Aman.

He was one of the kids I usually see through on the street. Running around, with a deceptively wide smile and worn rags. There was nothing special about him, nothing that made him seem any worse or any better than any other kid born into his fortune.

Yet, I noticed him when I was working in Nagla, a small village in Noida. I didn't notice him the most. Or the least. I couldn't have imagined his story would've had the most profound impact on me.... That it would open my eyes to realities I had never expected to exist.

I had approached the child completely randomly, as I was supposed to record the stories of some. My aim was to record the uncovered stories of these areas... and children were always the truest story tellers.

But no amount of preparation could have made me expect some of the horrors... this 10years old boy smilingly told me. Ironic, how his name means justice and he doesn't realize the numerous injustices in his life.

He comes from an abusive background, the youngest of 6. As is common I that area, the families are big. Numerous Chacha, Chachis, Mama, Mamis, Grandparents and cousins live in cramped space on limited resources.

These limited resources have several effects and the two this child felt very strongly were desperation and death. Desperation drove these people to extreme fits of rage and irrational decisions. In his own household, he very casually informed us, that children are only sent to school to steal.

If any of his cousins return home empty handed, they are beaten by their parents for not bringing home an eraser they can sell.

Is that the state of our country right now? That children taught to steal to survive. Taught to steal in schools, which is supposed be a second home to them. A safe haven... are they the ones making it unsafe? This duality sometimes effects the children in the form of an identity crisis, where they feel that they are neither true to their homes nor their schools.

Yet, this isn't the shocking part of his story. Another common feature in such societies are child death. Despite the big families, every child in Nagla had lost a sibling. Most had lost two or three. Yet, few had lost a sibling the way Aman had.

A year ago, Aman's two year old sister Rani was sick. As any worried parents, his parents visited the doctor to cure their child. However, unlike other doctors, the man they consulted informed the worried family that their child had an evil spirit possess her. The only way to get rid of it, was by tying their two years old daughter to a donkey's ass and making the donkey take rounds of the field.

So, Aman's parents tied Rani to the rear of a donkey while she was sick and beat the donkey so that it would run... after this information, I wasn't even surprised by the high child death rate in the area.

And what hurt me more was that this was just one story. One of a million. There are more children, suffering in bizarre, *outrageous* ways and no one knows. Most people aren't aware of the problem to fix them... the problem that we're trying to fix.

Anahita Dalmiya
XII IB, Step By Step school, Noida

रौशनी
11 वर्ष
निठारी सेंटर

जब भी बोलो, मीठा बोलो
पहले तोलो फिर तुम बोलो
कड़वी बात कभी न करना
नहीं पड़ेगा फिर दुःख सहना
मीठी बात सभी को भाती
कड़वी बात नहीं सुहाती
मीठा बोलो तो इस जग में
दोस्त सभी बन जाते हैं
कड़वी बोली से तो प्यारे
अपने भी कतराते हैं।

रीना चौबे, फैसिलिटेटर
बरोला सेंटर

बेटी हूँ अभिशाप नहीं,
हम भी इतिहास बदल देंगे
ज़रा हमको भी मौका दे दो
कुछ करके हम भी दिखा देंगे
ऐसा नहीं कि कमज़ोर हैं हम
बस थोड़ी सी हिम्मत दिखानी है
हम तो वो जग की जननी हैं
जिसके अन्दर सागर से
गहरा पानी है।

संतोष शर्मा, फैसिलिटेटर
निठारी सेंटर

साक्षरता की जल गयी ज्योत,
के मैया मैं भी पढने जाउंगी

लक्ष्मी बाई ऐसी बेटी, छोटी सी उम्र में लड़ी लड़ाई,
आज़ादी को कुर्बानी दी, मै उनकी राह पे जाउंगी,
मैं भी तो नाम कमाऊँगी, के मैया मैं भी पढने जाउंगी।।
इंदिरा गांधी ऐसी बेटी, प्रधान मंत्री पद पर बैठी
मुझको भी पढने भेज के मैया, मै सबके बराबर जाउंगी
मैं भी तो नाम कमाऊँगी, के मैया मैं भी पढने जाउंगी।।
ऐसा मत सोचे माँ मेरी, मै चौका बर्तन ही कर पाऊँगी,
मोहे ऐसी दुआ देना मैया, मै सबसे आगे निकल जाउंगी
मैं भी तो नाम कमाऊँगी, के मैया मैं भी पढने जाउंगी।।
छोटी सी उम्र में ब्याह न करो, जीवन मेरा खराब न करो,
हो जाउंगी बर्बाद के मैं तो जीवन भर पछताऊँगी
मैं भी तो नाम कमाऊँगी, के मैया मैं भी पढने जाउंगी।।

नीतू, फैसिलिटेटर
हरोला सेंटर

जलाते चलो ये शिक्षा रुपी दिए
कभी तो अशिक्षा का अँधेरा मिटेगा
जला दीप पहला तुम्ही ने अशिक्षा की
चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी
अशिक्षा की सरिता पार करने तुम्ही ने
बना शिक्षा की नाव तुम यह निरंतर
कभी तो शिक्षा को किनारा मिलेगा
जलाते चलो ....
शिक्षा और अशिक्षा की यह कहानी
चली आ रही है और चलती रहेगी
जली जो प्रथम बार लौ **'सदरग'** की
स्वर्ण सी जली और जलती रहेगी
रहेगा धरा पर **'उगता सूरज'** यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा
जलाते चलो ये शिक्षा रुपी दिए

अलका चौहान, फैसिलिटेटर
तुगलपुर सेंटर, ग्रेटर नॉएडा

दुनिया की है रीत पुरानी
बेटी को समझे परेशानी
पर लोगों तुमने यह बात न जानी
बेटी की कीमत न पहचानी
घर आँगन की ख़ुशी है बेटी
काँटों की राहों में चलती है बेटी
दो घरों की शान है बेटी
करती सदा सबका सम्मान है बेटी
बेटी न होती तो दुनिया कैसे चलती
उगता सूरज का स्वाभिमान है बेटी
बेटी बचाओ – देश बचाओ
घर घर बतलाओ – खुशियाँ फैलाओ

शशी सिंह, फैसिलिटेटर
तुगलपुर सेंटर, ग्रेटर नॉएडा

जितना हम डरें
दुनियां हमें डराती है
जितना हम झुकें
दुनिया हमें झुकाती है
अगर हम थोड़ी हिम्मत दिखा दें और आगे बढ़ें
तो दुनिया हमारे मज़बूत इरादों के आगे
सहम जाती हैं

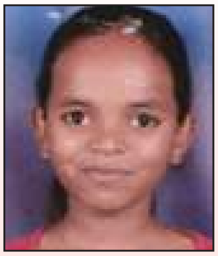

मिनाक्षी, 8 वर्ष
हरोला सेंटर

अगर ये पल जाते यहीं ठहर
पर्वत – झरना – नदी – नहर
जीवन जाता यहीं ठहर
कभी तितलियों के संग उड़ना
बुलबुल के जैसा गाना
कभी फुदकती गौरैया सी
घुल मिलकर बतियाना
लग जाते हैं पैरों में पर
ये पल जाते यही ठहर
कभी पतंग लूटने को
हुडदंगी दौड़ लगाना
आंधी में लुका छिपी खेलकर
बगिया से आम चुराना
भेंसों के ऊपर बैठना
पेड़ों में झूला झूलना
लग जाते हैं पैरों में पर
ये पल जाते यही ठहर

सोनाली, 9 वर्ष
बरोला सेंटर

मेरा नाम सोनाली है। मैं 9 वर्ष की हूं। मेरा एक बड़ा भाई भी है। मेरे पापा गांव में रहकर खेती करते हैं और मै, मेरा बड़ा भाई और मम्मी पिछले 10 सालों से नॉएडा में रह रहे हैं। मेरी मम्मी उगता सूरज सेंटर में पढ़ाती है। मेरी मम्मी ने हम दोनों भाई बहन को पढ़ा लिखाकर बड़ा करने में बहुत मेहनत की है और बहुत परेशानियों का सामना भी किया है। मै बड़ी होकर सॉफ्टवेयर इंजिनियर बनना चाहती हूँ, जिससे मैं अपने माता-पिता की परेशानियों को कुछ कम कर पाऊँ।

मेरी कहानी – अपनी ज़ुबानी

श्रुति, A.Y.V. प्रोग्राम
निठारी ग्राम

मैं श्रुति, कक्षा 12 वीं की छात्र हूँ। मैं पिछले 10 सालों से निठारी सेक्टर 31 में अपने माता – पिता के साथ रह रही हूँ। मेरी आयु 18 वर्ष है।

मै सन 2014 में A.Y.V. प्रोग्राम के साथ जुडी थी, यहाँ पर मुझे काफी कुछ सीखने को मिला। पहले मुझमें आत्म विश्वास की बहुत कमीं थी, मगर अब मुझमें आत्मविश्वास आ गया है, लोगों से बात करने में बहुत झिझकती थी, अब मैं किसी से भी बिना झिझक से बात कर सकती हूँ। A.Y.V. प्रोग्राम एक ऐसा माध्यम है जहाँ युवाओं को अपनी आवाज़ उठाने का मौका मिलता है। जिससे की युवाओं को अपने भावानुसार लोगों तक अपने सन्देश पहुँचाने का मौका देता है।

पिछले साल हमने 1 प्रोजेक्ट बनाया था जिस पर हमारे पुरे ग्रुप ने बहुत मेहनत की थी। दोस्ती का महत्व लोगों को समझाया, व यह सन्देश भी लोगो तक रोमांचक तरीके से पहुँचाया।

A.Y.V. प्रोग्राम के माध्यम से मैंने बहुत कुछ सीखा है, और मैं आगे भी इसी प्रोग्राम के साथ जुडी रहना चाहती हूँ। इस प्रोग्राम के माध्यम से मेरे जीवन को एक नई दिशा मिली है।

नीटू, 11 वर्ष
बरोला सेंटर

माँ तूने मुझे जन्म दिया
और छोड़ दिया इस दुनिया में
पर तुझको क्या पता है माँ
ये दुनिया वाले कितने बुरे
मेरे नन्हे नन्हे हाथों में झाड़ू
पकड़ाकर रखते हैं
खाने को पेट भर रोटी नहीं,
बस आँखों से आंसू बहते हैं
एक बार तो आकर गले से
मुझको लगाले न माँ
पर तू तो इतनी दूर है माँ
मै कुछ भी नहीं कह सकता हूँ
बस अपने जीवन के कुछ पल
इस ख़त में लिख सकता हूँ।

प्रशांत, 7 वर्ष
बरोला सेंटर

मेरा नाम प्रशांत है। मै 7 साल का हूँ। मेरे पापा फेक्ट्री में धागा काटने का काम करते हैं और मम्मी घर पर ही रहती हैं। मेरी एक छोटी बहन भी है जो 5 साल की है और बहुत शरारती है। मुझे उसके साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है। मैं और मेरी बहन पिछले 2 सालों से उगता सूरज के सेंटर में पढने जाते हैं। मेरा एक सपना है कि मैं एक बहुत बड़े स्कूल में पढने जाऊं, इंग्लिश में बात करूँ। बड़े होकर अपने मम्मी पापा का हाथ बटाऊँ। हम किराये के छोटे से कमरे में रहते हैं। मैं पढ़ लिखकर अपने मम्मी पापा के लिए एक घर खरीदना चाहता हूँ। जिसके लिए मुझे बहुत सारा पढना पढ़ेगा। मेरे पापा मुझे किसी भी बड़े स्कूल में पढने के लिए नहीं भेज सकते। मगर इस साल सदरग संस्था की तरफ से मुझे नॉएडा पब्लिक स्कूल दाखिला मिला है मै बहुत खुश हूँ की अब मै अपना सपना पूरा कर पाउँगा।

सबकी दुनिया एक
धरती है हम सबकी एक
आसमान हम सबका एक
सूरज है हम सबका एक
चंदा है हम सबका एक
पानी है हम सबका एक
और पवन है सबकी एक
है दुनिया में लोग अनेक
लेकिन सबकी दुनिया एक
Name-Radhika
धरती
Name-Misty

Name = Nikhil Kumar

Ankush
Age-11

Name-Misty
A Girl is celebrate
Earth
Day

11 years

Sonali

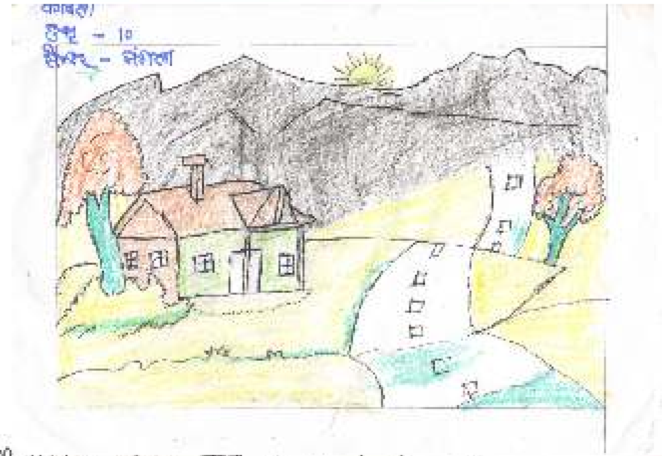

Radhika Class-IV Sec-A Age-9

- **नन्दनी**
6 वर्ष
नंगला सेन्टर

SADRAG

Social
And
Development
Research &
Action
Group

Programme Locations:
Community Centres –
Nithari, Barola, Harola, Tugalpur, Nagla
Ph.: 9313678373 / 0120-3264313
E-mail: mail@sadrag.org
Url: www.sadrag.org

GALAXY • 98105 73082